# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| ग्रन्थकारके द्वारा कसायपाहुडकी उत्पत्ति-स्थानका निर्देश | १ |
| चूर्णिकारके द्वारा कसायपाहुडके उपक्रमका निरूपण | २ |
| ग्रन्थकार-द्वारा कसायपाहुडके पन्द्रह अधिकारोंमें विभक्त गाथाओंका निर्देश | ४ |
| अट्ठाईस मूल गाथाओंकी भाष्य गाथाओंका निरूपण | १० |
| ग्रन्थकार-द्वारा कसायपाहुडके पन्द्रह अधिकारोंका निरूपण | १३ |
| चूर्णिकार-द्वारा अन्य प्रकारसे पन्द्रह अधिकारोंका वर्णन | १४ |
| कसायपाहुडके दूसरे नामका निर्देश | १६ |
| पेज्ज पदकी निक्षेपोंमे योजना और नयोंमें विभाजन | ,, |
| दोस पदकी निक्षेपोंमें योजना और नयोंमें विभाजन | १६ |
| पाहुड शब्दका निक्षेप और उसकी निरुक्ति | २८ |
| ग्रन्थकार-द्वारा अनाकार-उपयोग आदि पदोंके कालका निरूपण | २६ |
| नयोंकी अपेक्षा पेज्ज और दोसका स्वामित्वादि अनुयोगोंसे निरूपण | ३४ |
| **प्रकृति-विभक्ति** | **४५-७६** |
| विभक्ति पदका निक्षेपों की अपेक्षा भेद-निरूपण | ४५ |
| कर्म-विभक्तिका ग्रन्थकारके द्वारा निरूपण | ४८ |
| प्रकृतिविभक्तिके उत्तरभेदोंका स्वामित्व आदि अनुयोगोंके द्वारा निरूपण | ५० |
| प्रकृति-स्थान-विभक्तिकी स्थान समुत्कीर्तना | ५७ |
| प्रकृति-स्थानोके स्वामित्वका निरूपण | ५८ |
| प्रकृति-स्थानोंके कालका ,, | ६१ |
| प्रकृति-स्थानोके अन्तरका ,, | ७० |
| प्रकृति-स्थानोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय निरूपण | ७३ |
| प्रकृति-स्थानोंका अल्पबहुत्व | ७५ |
| भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित-विभक्तिके निरूपणकी सूचना | ७६ |
| भुजाकारादि विभक्तियोंका एक जीवकी अपेक्षा काल-निरूपण | ७७ |
| प्रकृतिविभक्तिमें पदनिक्षेप और वृद्धिके अनुमार्गणकी सूचना | ७६ |
| **स्थिति-विभक्ति** | **८०-१४६** |
| स्थितिविभक्तिके उत्तरभेदोंका निरूपण | ८० |
| स्थितिविभक्तिका तेईस अनुयोग-द्वारोंसे निरूपण | ८१ |
| उत्तरप्रकृति स्थितिविभक्तिका अर्थपद | ६१ |
| मिथ्यात्व आदि कर्मोंकी उत्कृष्टस्थिति-विभक्तिका निरूपण | ६२ |
| मिथ्यात्व आदि कर्मोंकी जघन्य स्थिति-विभक्तिका निरूपण | ६४ |
| मिथ्यात्व आदि कर्मोंके उत्कृष्ट और जघन्य स्वामित्वका निरूपण | ६७ |
| मिथ्यात्व आदि कर्मोंकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थितिविभक्तिके कालका निरूपण | १०२ |
| मिथ्यात्व आदि कर्मोंकी उत्कृष्ट और जघन्य स्थितिविभक्तिके अन्तरका निरूपण | १०४ |
| नाना जीवोंकी अपेक्षा स्थितिविभक्तिका भग-विचय | १०६ |
| नाना जीवोंकी अपेक्षा स्थितिविभक्तिका अन्तर-निरूपण | ११० |
| स्थिति-विभक्तिके सन्निकर्षका निरूपण | १११ |
| स्थितिविभक्तिका अल्पबहुत्व | १२१ |

भुजाकार अल्पतर, अवस्थित और अवक्तव्यविभक्तिके अर्थपदका वर्णन १२३
भुजाकार स्थिति-विभक्तिके कालका एक जीवकी अपेक्षा निरूपण १२५
भुजाकारस्थिति-विभक्तिका नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय १३०
भुजाकार स्थिति विभक्तिका नाना जीवोंकी अपेक्षा काल ,,
भुजाकार स्थितिविभक्तिका नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर १३१
भुजाकार स्थितिविभक्तिके सन्निकर्षका निरूपण १३२
भुजाकार स्थितिविभक्तिका अल्पबहुत्व १३४
भुजाकार स्थितिविभक्तिके पदनिक्षेपका वर्णन १३५
स्थितिविभक्तिके वृद्धिका निरूपण १३६
वृद्धिकी अपेक्षा स्थितिविभक्तिके कालका निरूपण १३७
वृद्धिकी अपेक्षा अन्तरका निरूपण १३९
वृद्धिकी अपेक्षा स्थितिविभक्तिका अल्पबहुत्व १४०
स्थितिसत्कर्मस्थानोंका निरूपण १४१
अनिवृत्तिकरण आदि पदोंका कालसम्बन्धी अल्पबहुत्व १४४
स्थितिसत्कर्मस्थानोंका अल्पबहुत्व १४५

**अनुभाग-विभक्ति १४७-१७६**

अनुभागविभक्तिके उत्तर-भेदोंका निरूपण १४७
मूल अनुभागविभक्तिका तेईस अनुयोगद्वारोंसे निरूपण १४८
मोहनीयकर्मकी उत्तर प्रकृतियोंके देशघाती सर्वघाती अंशोंका विभाजन १५७
घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञाके द्वारा मोहकर्मके उत्तरभेदोंका निरूपण १५८
मिथ्यात्व आदि प्रकृतियोंकी अनुभागविभक्तिका स्वामित्व-निरूपण १६०
मिथ्यात्व आदि प्रकृतियोंकी अनुभागविभक्तिके उत्कृष्ट और जघन्य कालका निरूपण १६३
मिथ्यात्व आदि प्रकृतियोंकी अनुभागविभक्तिके उत्कृष्ट और जघन्य अन्तरका निरूपण १६५
नाना जीवोंकी अपेक्षा अनुभागविभक्तिका भंग-विचय १६६
नाना जीवोंकी अपेक्षा अनुभागविभक्तिक काल १६८
नाना जीवोंकी अपेक्षा अनुभागविभक्तिका अन्तर १६९
अनुभागविभक्तिका अल्पबहुत्व १७१
सत्कर्मस्थानोंके भेद और उनके अल्पबहुत्वका निरूपण १७५

**प्रदेश-विभक्ति १७७-२१२**

प्रदेशविभक्तिके उत्तर भेदोंका निरूपण १७७
मूलप्रकृति-प्रदेशविभक्तिका बाईस अनुयोगद्वारोंसे निरूपण ,,
उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिके स्वामित्वका निरूपण १८४
उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिका काल १९८
उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिका अन्तर १९९
नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिका भंगविचय ,,
नाना जीवोंकी अपेक्षा उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिका काल और अन्तर २००
उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिके उत्कृष्ट प्रदेश-सत्कर्मका अल्पबहुत्व २०१
उत्तरप्रकृति-प्रदेशविभक्तिके जघन्य प्रदेश-सत्कर्म-अल्पबहुत्वका सकारण निरूपण २०६
नरकगतिमें जघन्य प्रदेशसत्कर्मके अल्पबहुत्वका निरूपण २०८
एकेन्द्रियोंमें जघन्य प्रदेशसत्कर्मके अल्पबहुत्वका निरूपण २१०

**क्षीणाक्षीणाधिकार २२३-२३४**

उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण और उदयकी अपेक्षा कर्मोंके क्षीणस्थितिक और क्षीणस्थितिकका निरूपण २१३
उत्कर्षणादि चारो पदोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट क्षीणस्थितिकका स्वामित्व २१०

उत्कर्षणादि चारों पदोंकी अपेक्षा जघन्य क्षीणस्थितिक स्वामित्वका निरूपण २२६
क्षीणस्थितिक प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व २३१

**स्थितिक-अधिकार २३५-२४७**

उत्कृष्ट स्थितिप्राप्तक, निषेकस्थितिप्राप्तक, यथानिषेकस्थितिप्राप्तक और उदय-स्थितिप्राप्तक कर्मोंकी समुत्कीर्तना और उनका अर्थपद २३५
मिथ्यात्व आदि कर्मोंके उत्कृष्ट स्थिति-प्राप्तक आदिका स्वामित्व २३६
उत्कृष्टस्थितिप्राप्तक आदि कर्मोंके अल्प-बहुत्वका निरूपण २४५

**बंध-अर्थाधिकार २४८-२४९**

ग्रन्थकार-द्वारा बंध और संक्रमणकी सूचना २४८

**संक्रम-अर्थाधिकार २५०-४६४**

सक्रमणका उपक्रम-निरूपण २५०
प्रकृतिसंक्रमणका ग्रन्थकारद्वारा निर्देश २५२
प्रकृतिसंक्रमणके स्वामित्वका निरूपण २५५
प्रकृतिसक्रमके कालका ,, २५६
प्रकृतिसंक्रमके अन्तरका ,, २५७
नाना जीवोंकी अपेक्षा प्रकृतिसंक्रमका भंग-विचय ,,
प्रकृतिसक्रमके सन्निकर्षका निरूपण २५८
प्रकृतिसक्रमका अल्पबहुत्व २५९
प्रकृतिस्थानसंक्रमकी समुत्कीर्तना २६०
प्रकृति-प्रतिग्रहस्थानोंका वर्णन २६१
प्रतिग्रहस्थानोंमें संक्रमस्थान २६३
संक्रमस्थानोंके प्रतिग्रहस्थानोंका चित्र २७०
सत्त्व स्थानोंमें संक्रमस्थानोंका वर्णन २७१
गुणस्थानोंमें संक्रमस्थान और प्रतिग्रह-स्थानोंका चित्र २७२
मार्गणास्थानोंमें संक्रमस्थान २७३
मार्गणाओंमें संक्रमस्थानों और प्रतिग्रह-स्थानोंका विवरण २७९
मोहनीय कर्मके सत्त्वस्थानोंमें सक्रम-स्थानोंका चित्र २८३
मोहनीयकर्मके बंधस्थानो में संक्रम स्थानोंका चित्र २८६
संक्रमस्थानोंकी प्रकृतियोंका निरूपण २८९
संक्रमस्थानोंके कालका ,, २९५
संक्रमस्थानोंके अन्तरका ,, ३०१
संक्रमस्थानोंके अल्पबहुत्वका ,, ३०७

**स्थिति-संक्रमाधिकार ३१०-३४४**

स्थितिसंक्रमके भेद और अर्थपद ३१०
स्थितिके निक्षेप और अतिस्थापनाका वर्णन ३११
निर्व्याघातकी अपेक्षा निक्षेप और अतिस्थापनाका वर्णन ३१५
व्याघातकी अपेक्षा निक्षेप और अति-स्थापनाका वर्णन ३१६
स्थितिसंक्रमसम्बन्धी अद्धाच्छेदका वर्णन ३१८
उत्कृष्ट और जघन्य स्थितिसंक्रमके स्वामित्वका वर्णन ३१९
एक जीवकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमके काल और अन्तरका वर्णन ३२२
नाना जीवोंकी अपेक्षा स्थितिसक्रमका भंगविचय ३२३
नाना जीवोंकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमके कालका वर्णन ,,
स्थितिसक्रमका ओघकी अपेक्षा अल्प-बहुत्व ३२४
नरकगतिकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमका अल्पबहुत्व ३२६
भुजाकारस्थितिसक्रमका स्वामित्व ३२८
भुजाकार स्थितिसक्रमका काल ३२९
भुजाकार स्थिति सक्रमका अतर ३३१
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार स्थिति सक्रमका भगविचय ३३३
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार स्थिति-संक्रमका काल ,,
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार स्थिति-सक्रमका अन्तर ३३४
भुजाकारस्थितिसंक्रामकोंका अल्पबहुत्व ३३५

पदनिक्षेपकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमका स्वामित्व ३३७
पदनिक्षेपकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमका अल्पबहुत्व ३४०
वृद्धिकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमकी समुत्कीर्तना ३४१
वृद्धिकी अपेक्षा स्थितिसंक्रमका अल्पबहुत्व ३४२

**अनुभाग संक्रम ३४५-३९६**

अनुभागसंक्रमके भेद और उनका अर्थपद ३४५
अपकर्षणकी अपेक्षा निक्षेप और अतिस्थापनाका निरूपण ३४६
अपकर्षणकी अपेक्षा जघन्य निक्षेप आदि पदोंका अल्पबहुत्व ,,
उत्कर्षणकी अपेक्षा निक्षेप और अतिस्थापनाका निरूपण ३४७
उत्कर्षणकी अपेक्षा जघन्य निक्षेप आदि पदोंका अल्पबहुत्व ३४८
अनुभागसंक्रमकी घातिसंज्ञा और स्थानसंज्ञाका निरूपण ३४९
अनुभागसंक्रमका स्वामित्व ३५१
एक जीवकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमका काल ३५४
एक जीवकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमका अन्तर ३५७
अनुभागसंक्रमके संन्निकर्षका निरूपण ३६
नाना जीवोंकी अपेक्षा अनुभागसक्रम का भंगविचय ३६३
नाना जीवोंकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमका काल ३६४
नाना जीवोंकी अपेक्षा अनुभागसक्रमका अन्तर ३६६
ओघकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमका अल्पबहुत्व ३६८
नरकगतिकी अपेक्षा अनुभागसक्रमका अल्पबहुत्व ३७१
एकेन्द्रियोंमें अनुभागसक्रमका अल्पबहुत्व ३७३
भुजाकार-अनुभागसंक्रमका अर्थपद ३७३
भुजाकार-अनुभागसक्रमका स्वामित्व ३७४
एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार-अनुभाग संक्रमका काल ३७५
एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार-अनुभागसंक्रमका अन्तर ३७७
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार-अनुभागसक्रमका भगविचय ३७९
नानाजीवोंकी अपेक्षा भुजाकार-अनुभागका काल ३८०
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार-अनुभागसंक्रमका अन्तर ३८१
भुजाकार-अनुभागसक्रमका अल्पबहुत्व ३८२
पदनिक्षेपकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमकी प्ररूपणा ,,
पदनिक्षेपकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमका स्वामित्व ३८२
पदनिक्षेपकी अपेक्षा अनुभागसक्रमका अल्पबहुत्व ३८८
वृद्धिकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमकी समुत्कीर्तना ३८९
वृद्धिकी अपेक्षा अनुभागसंक्रमका स्वामित्व ,,
वृद्धिकी अपेक्षा अनुभागसक्रमका अल्पबहुत्व ३९०
अनुभागसंक्रमस्थानोंकी प्ररूपणा ३९२
अनुभागसंक्रमस्थानोंका अल्पबहुत्व ३९४

**प्रदेश-सक्रम ३९७-४६४**

प्रदेशसक्रमका अर्थपद ३९७
प्रदेशसंक्रमके भेद और उनका स्वरूप ,,
प्रदेशसंक्रमका उत्कृष्ट स्वामित्व ४०१
प्रदेशसक्रमका जघन्य स्वामित्व ४०५
एक जीवकी अपेक्षा प्रदेशसक्रमका काल ४१०
एक जीवकी अपेक्षा प्रदेशसक्रमका अन्तर ४१०
प्रदेशसक्रमका सन्निकर्ष ४११
ओघकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रमका अल्पबहुत्व ४१२

नरकगतिकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रदेशसंक्रम-का अल्पबहुत्व ४१४
एकेन्द्रियोंकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रदेशसक्रम-का अल्पबहुत्व ४१५
ओघकी अपेक्षा जघन्य प्रदेशसंक्रमका अल्पबहुत्व ४१७
नरकगतिकी अपेक्षा जघन्य प्रदेशसंक्रम का अल्पबहुत्व ४१९
एकेन्द्रियोंकी अपेक्षा जघन्य प्रदेश-सक्रमका अल्पबहुत्व ४२१
भुजाकार प्रदेशसक्रमका अर्थपद ४२२
भुजाकार प्रदेशसक्रमकी समुत्कीर्तना ४२३
भुजाकार प्रदेशसक्रमका स्वामित्व ४२४
एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार प्रदेश-संक्रमका काल ४२७
एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार प्रदेश-सक्रमका अन्तर ४३३
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार प्रदेश-सक्रमका भंगविचय ४३९
नाना जीवोंकी अपेक्षा भुजाकार प्रदेश-संक्रमका अन्तर ४४०
भुजाकार प्रदेशसक्रमका अल्पबहुत्व ४४२
पदनिक्षेपकी अपेक्षा प्रदेशसंक्रमकी प्ररूपणा ४४४
पदनिक्षेपकी अपेक्षा उत्कष्ट प्रदेशसंक्रम-का स्वामित्व ४४५
पदनिक्षेपकी अपेक्षा जघन्यप्रदेशसंक्रमका स्वामित्व ४५०
पदनिक्षेपकी अपेक्षा प्रदेशसक्रमका अल्पबहुत्व ४५४
वृद्धिकी अपेक्षा प्रदेशसक्रमकी समुत्की-र्तना, स्वामित्व और अल्पबहुत्व ४५६
प्रदेशसक्रमस्थानोंकी प्ररूपणा ”
ओघकी अपेक्षा प्रदेश-संक्रम-स्थानोंका अल्पबहुत्व ४५८
नरकगतिकी अपेक्षा प्रदेशसंक्रमस्थानों-का अल्पबहुत्व ४५९
एकेन्द्रियोंकी अपेक्षा प्रदेशसंक्रमस्थानों-का अल्पबहुत्व ४६२

## वेदक-अर्थाधिकार ४६५-५५५

ग्रन्थकारके द्वारा उदय और उदीरणा-सम्बन्धी प्रश्नोंका उद्भावन ४६५
एकैकप्रकृति-उदीरणाके भेद और उनका चौबीस अनुयोग-द्वारोंसे वर्णनकी सूचना ४६७
प्रकृतिस्थान-उदीरणाकी समुत्कीर्तना ४६८
उदीरणास्थानोंकी प्रकृतियोंका निर्देश और उनके भंग ४६९
एक जीवकी अपेक्षा उदीरणास्थानोंका काल और अन्तर ४७४
नाना जीवोंकी अपेक्षा उदीरणास्थानों-का भगविचय, काल और अन्तर ”
उदीरणा स्थानोंकासन्निकर्ष ४७५
उदीरणास्थानोंका अल्पबहुत्व ४७६
भुजाकार-प्रकृति उदीरणाका स्वामित्व ४७८
एक जीवकी अपेक्षा भुजाकार-प्रकृति-उदीरणाका काल ४७८
एकजीवकी अपेक्षा भुजाकार-प्रकृति-उदीरणाका अन्तर ४८०
भुजाकारप्रकृति-उदीरणाका अल्पबहुत्व ४८२
उदीरणास्थानोंका वर्णन ४८३
एक जीवकी अपेक्षा उदीरणास्थानोंका काल ४९२
उदीरणास्थानोंका अल्पबहुत्व ४९६
स्थिति-उदीरणाके उत्तर-भेदोंका स्वामित्व आदि अनुयोगद्वारोंसे वर्णनकी सूचना ४९९
अनुभागउदीरणाका अर्थपद ”
अनुभागउदीरणाके उत्तरभेदोंका वर्णन ५००
मिथ्यात्व आदि कर्मोंकी घातिसंज्ञा और स्थानसज्ञाका वर्णन ५०१
उ कृष्टअनुभाग-उदीरणाका स्वामित्व ५०३
जघन्य अनुभागउदीरणाका स्वामित्व ५०५
एक जीवकी अपेक्षा अनुभागउदीरणा-का काल ५०८
एक जीवकी अपेक्षा अनुभागउदीरणा-का अन्तर ५१०

ओघकी अपेक्षा उत्कृष्ट अनुभाग-उदीरणाका अल्पबहुत्व ५१२
ओघकी अपेक्षा जघन्य अनुभाग उदीरणाका अल्पबहुत्व ५१५
नरकगतिकी अपेक्षा जघन्य अनुभाग-उदीरणाका अल्पबहुत्व ५१७
प्रदेशउदीरणाके उत्तर भेदोंका निरूपण ५१८
उत्कृष्ट प्रदेशउदीरणाका स्वामित्व ५१९
जघन्य प्रदेशउदीरणाका " ५२२
एक जीवकी अपेक्षा प्रदेशउदीरणाका काल ५२३
एक जीवकी अपेक्षा प्रदेशउदीरणाका अन्तर ५२५
प्रदेशउदीरणाका सन्निकर्ष ५२६
ओघकी अपेक्षा प्रदेशउदीरणाका अल्प-बहुत्व ५२७
नरकगतिकी अपेक्षा प्रदेशउदीरणाका अल्पबहुत्व ५२८
प्रकृतिकी अपेक्षा अल्पबहुत्व ५३३
स्थितिकी अपेक्षा बन्धादि पांच पदोंका अल्पबहुत्व ५३४
अनुभागकी अपेक्षा बन्धादि पाँच पदो-का अल्पबहुत्व ५४४
प्रदेशोंकी अपेक्षा बन्धादि पाँच पदोंका अल्पबहुत्व ५४९

**उपयोग-अर्थाधिकार ५६५-५७६**

ग्रन्थकार-द्वारा कषायोंके उपयोग-सम्बन्धी पृच्छाओंका उद्भावन ५५६
चूर्णिकार-द्वारा उक्त पृच्छाओंके उपयोग-कालका अल्पबहुत्व ५६०
ओघकी अपेक्षा कषायोंके उपयोगकाल-का अल्पबहुत्व ५६१
प्रवाह्यमान उपदेशकी अपेक्षा चतुर्गतिके उपयोगकालका अल्पबहुत्व ५६२
चौदह जीवसमासोंकी अपेक्षा कषायोंके उपयोगकालका अल्पबहुत्व ५६४
कौन जीव किस कषायमें लगातार कितनी देर तक उपयुक्त रहता है, इस शंकाका समाधान ५६८
चारों गतियोंकी अपेक्षा कषायोंके उपयोग-परिवर्तनवारोंका वर्णन ५७०
कषायोंके उपयोगपरिवर्तनवारोंका अल्प० ५७२
कषाय-सम्बन्धी उपयोगवर्गणाओंका ओघ और आदेशकी अपेक्षा वर्णन ५७८
प्रवाह्यमान और अप्रवाह्यमान उपदेशकी अपेक्षा कषाय और उनके अनुभागका वर्णन ५८०
नौ पदोंकी अपेक्षा कषायोंके उदयस्थानों में कषायोंके उपयोगकाल-सम्बन्धी अल्पबहुत्वका वर्णन ५८२
सदृश कषायोपयोग-वर्गणाओंमें उपयुक्त जीवोंका वर्णन ५८५
वर्तमानकालमें मानकषायसे उपयुक्त जीवोंका अतीतकालमें मान, नोमान और मिश्रकालका वर्णन ५८७
मानके समान शेष कषायोंके त्रिविधकाल-का निरूपण "
चारों कषायोंके उपयुक्त बारह पदोंका अल्पबहुत्व ५९०
कषायोदयस्थान और कषायोपयोग-काल-स्थानरूप उपयोगवर्गणाओंका वर्णन ५९१
प्रवाह्यमान और अप्रवाह्यमान उपदेशों-की अपेक्षा त्रस जीवोंके कषायोदय-स्थानोंका वर्णन ५९३
कषायोंकी प्रथमादिक तीन प्रकारकी अल्पबहुत्व-श्रेणियोंका निरूपण ५९५

**चतुःस्थान-अर्थाधिकार ५९७-६१०**

क्रोधादि चारों कषायोंके चार-चार स्थानोंका वर्णन ५९७
चारों कषायोंके सोलहों स्थानोंके स्थिति, अनुभाग और प्रदेशकी अपेक्षा अल्पबहुत्वका वर्णन ६००
कषायोंके स्थानोंका मार्गणास्थानोंमें वर्णन ६०४
कषायोंके लतासमान आदि स्थानोंके बन्धक-अबन्धक आदिका विचार ६०५
कषायोंके स्थानोंका निक्षेप-निरूपण ६०७

क्रोधके चारों स्थानोंके कालकी अपेक्षा और शेष कषायोंके स्थानोंका भावकी अपेक्षा निदर्शन-निरूपण ६०८

**व्यंजन-अर्थाधिकार ६११-६१३**

क्रोध, मान, माया और लोभके पर्याय-वाची नामोंका निरूपण ६११

**सम्यक्त्व-अर्थाधिकार ६१४-६३८**

दर्शनमोहके उपशमन करनेवाले जीवके परिणाम, योग, कषाय, उपयोग लेश्यादि-सम्बन्धी प्रश्नोंका ग्रन्थकार-द्वारा उद्भावन और चूर्णिकार-द्वारा उनका समाधान ६१४

दर्शनमोह—उपशामकके बन्ध और उदय-सम्बन्धी प्रकृतियोंका निरूपण ६१७

अधःप्रवृत्त आदि तीनों करणोंके स्वरूपका निरूपण ६२२

चरमसमयवर्ती मिथ्यादृष्टिके तदनन्तर समयमें प्रथमोपशमसम्यक्त्वकी उत्पत्तिका वर्णन ६२८

दर्शनमोह-उपशामक-सम्बन्धी पच्चीस पदवाले अल्पबहुत्वका वर्णन ६२९

दर्शनमोहका उपशमन करने योग्य गति आदिका वर्णन ६३०

दर्शनमोह-उपशामककी निर्व्याघातताका निरूपण ६३१

उपशामक-सम्बन्धी कुछ विशेषताओंका निरूपण ६३२

**दर्शनमोहक्षपणा-अर्थाधिकार ६३९-६५७**

दर्शनमोहक्षपणा-प्रस्थापकका स्वरूप और तत्संबंधी कुछ अन्य विशेषताओंका वर्णन ६३९

दर्शनमोहक्षपकके अपूर्वकरणमें होने-वाली क्रियाओंका वर्णन ६४४

दर्शनमोहक्षपकके अनिवृत्तिकरणमें होने वाले स्थितिघात आदिका वर्णन ६४७

सम्यक्त्वप्रकृतिकी स्थितिसत्त्वके विषयमें प्रवाह्यमान और अप्रवाह्यमान उपदेशोंका उल्लेख ६४९

प्रवाह्यमान उपदेशकी अपेक्षा अपूर्व-करण और अनिवृत्तिकरणमें होने वाले क्रियाविशेषोंका वर्णन ६५०

कृतकृत्यवेदक-अवस्थाका और उसमें मरण आदिका वर्णन ६५३

दर्शनमोहक्षपक के अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर प्रथम समयवर्ती कृत-कृत्य वेदक होने तक मध्यवर्ती कालमें होने वाले स्थितिकाण्डक-घात आदि पदोंका अल्पबहुत्व ६५५

**संयमासंयमलब्धि अधिकार ६५८-६६८**

संयमासयमको प्राप्त करनेवाले जीवके परिणामोंकी उत्तरोत्तर वृद्धि और पूर्वबद्ध कर्मोंकी स्थिति आदिका वर्णन ६५८

प्रथम समयवर्ती संयतासंयतके स्थिति-काण्डक, गुणश्रेणी आदिका वर्णन ६६२

अधःप्रवृत्तसंयतासंयतकी विशेष क्रिया-ओंका वर्णन ,,

सयमासंयमको प्राप्त करनेवाले जीवके अपूर्वकरणके प्रथम समयसे लेकर सयमासंयमको प्राप्त कर एकातानु-वृद्धिसे बढ़नेके काल तक संभव पदोंका अल्पबहुत्व ६६४

संयमासयम लब्धिस्थानोंका वर्णन ६६६

सयमासयम लब्धिस्थानोंकी तीव्रमन्दता-का अल्पबहुत्व ,,

**संयमलब्धि-अर्थाधिकार ६६९-६७५**

संयमको प्राप्त करनेवाले जीवके संभव क्रियाओंका वर्णन ६६९

संयमको प्राप्त करनेवाले जीवके अपूर्व-करणके प्रथम समयसे लेकर अधः-प्रवृत्तसंयत होने तकके मध्यवर्ती कालमें सभव पदोंका अल्पबहुत्व ६७०

सयमलब्धिस्थानोंके भेदोंका वर्णन ६७२

संयमलब्धिस्थानोंका अल्पबहुत्व ६७३

**चारित्रमोहोपशामना अधिकार ६७६-७२७**

उपशामना कितने प्रकारकी होती है, किस-किस कर्मका उपशम होता है, और कौन-कौन कर्म उपशान्त या अनुपशान्त रहता है,इत्यादि प्रश्नों-का ग्रन्थकारद्वारा उद्भावन और समाधान ६७६

चारित्रमोह-उपशामक वेदकसम्यग्दृष्टि-की विशेष क्रियाओंका वर्णन ६७८

क्षायिकसम्यग्दृष्टि-उपशामककी विशेष क्रियाओंका वर्णन ६८१

चारित्रमोहोपशामकके अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें होनेवाले स्थितिबंध आदिका वर्णन ६८२

अन्तरकरणके अनन्तर प्रथम समयमें एक साथ प्रारम्भ होनेवाले सात क्रियाविशेषोंका वर्णन ६९०

छह आवलियोंके व्यतीत होने पर ही क्यों उदीरणा होती है इस प्रश्नका सकारण निरूपण ६९१

स्त्रीवेदके उपशमनका विधान ६९४

सात नोकषायोंके उपशमनका " ६९६

प्रथमसमयवर्ती अवेदी उपशामकके स्थितिबंध आदिका निरूपण ६९७

अनुभागकृष्टियोंका " ७०२

कृष्टियोंकी तीव्रमन्दताका अल्पबहुत्व ७०३

कृष्टिकरणकालका निरूपण "

प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक उप-शामककी विशेष क्रियाओंका वर्णन ७०४

उपशान्तकषाय वीतरागसंयतकी विशेष क्रियाओंका वर्णन ७०५

उपशामनाके भेद-प्रभेदोंका निरूपण ७०७

उपशमन-योग्य कर्मोंका निरूपण ७०९

स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी अपेक्षा उपशामकके उदय-उदीरणा आदि पदोंका अल्पबहुत्व ७१०

आठ प्रकारके करणोंका निर्देश और कौन करण कहाँ विच्छिन्न होजाता है इस बातका निरूपण ७१२

उपशान्तकषायगुणस्थानसे गिरनेका सकारण निरूपण ७१४

गिरनेवाले सूक्ष्मसाम्परायिकसंयतकी विशेष क्रियाओंका वर्णन ७१५

गिरनेवाले बादरसाम्परायिक संयतकी विशेष क्रियाओंका विधान ७१६

उक्त जीवके सम्भव स्थितिबन्धोंके अल्प-बहुत्वोंका निरूपण ७१७

गिरनेवाले बादर साम्परायिकसंयतके मोहनीय कर्मका अनानुपूर्वीसंक्रम, तथा ज्ञानावरणादि-कर्मोंकी प्रकृतियोंके सर्वघाती होनेका विधान ७२२

गिरनेवाले अपूर्वकरणसंयतके प्रगट होने-वाले करणोंका, सम्भव प्रकृतियोंकी उदीरणा और बन्धका विधान ७२५

गिरनेवाले अधःप्रवृत्तसंयतकी विशेष-क्रियाओंका वर्णन ७२६

पुरुषवेद और मानके उदयके साथ श्रेणी चढ़नेवाले जीवकी विभिन्नताओंका वर्णन ७२७

पुरुषवेद और मायाके साथ श्रेणी चढ़ने-वाले जीवकी विभिन्नताओंका वर्णन ७२९

पुरुषवेद और लोभके साथ श्रेणी चढ़ने-वाले जीवकी विभिन्नताओंका वर्णन ७३०

नपुंसकवेदके उदयके साथ श्रेणी चढ़ने-वाले उपशामककी विभिन्नताओंका वर्णन ७३१

पुरुषवेद और क्रोधके साथ श्रेणी चढ़ने-वाले प्रथमसमयवर्ती अपूर्वकरण-संयतसे लेकर गिरनेवाले चरम-समयवर्ती अपूर्वकरणसंयतके सम्भव मध्यवर्ती पदोंका अल्पबहुत्व ७३१-७३७

**चारित्रमोहक्षपणा-अर्थाधिकार ७३८-८९६**

चारित्रमोह-क्षपकके परिणाम, योग, उपयोग, लेश्या आदिका वर्णन ७३८

चारित्रमोहका क्षपण करनेके पूर्व ही बन्ध और उदयसे व्युच्छिन्न होनेवाली प्रकृतियोंका वर्णन ७३९

अपूर्वकरण-प्रविष्ट चारित्रमोहक्षपणा-प्रस्थापकके स्थितिघात आदि क्रिया-विशेषोंका निरूपण ७४१
अनिवृत्तिकरणप्रविष्ट चारित्रमोहक्षपक-के आवश्यकोंका निरूपण ७४३
अनिवृत्तिकरण क्षपकके बंधनेवाले कर्मों-के स्थितिबन्ध-सम्बन्धी अल्पबहुत्वों-का निरूपण ७४५
अनिवृत्तिकरण क्षपकके सम्भव सत्कर्मों-के स्थितिसत्त्वोंका अल्पबहुत्व ७४८
आठ मध्यम कषायोंके और निद्रानिद्रादि सोलह प्रकृतियोंके क्षपणका विधान ७५१
चार संज्वलन और नव नोकषाय इन तेरह कर्मोंके अन्तरकरणका विधान ७५२
नपुंसकवेद और स्त्रीवेदके क्षपणका विधान ७५३
सात नोकषायोंके क्षपकके स्थितिबन्धका अल्पबहुत्व ७५४
ग्रन्थकारद्वारा संक्रमण-प्रस्थापककी विशेष क्रियाओंका निरूपण ७५६
अपवर्तनाका अर्थ ७६१
आनुपूर्वीसंक्रमणका स्वरूप ७६४
संक्रमण-प्रस्थापकके बन्ध, उदय और संक्रमणके समानता और असमा-नताका वर्णन ७६८
अनुभाग और प्रदेश-सम्बन्धी बन्ध, उदय और संक्रमण-विषयक स्व-स्थान-अल्पबहुत्वका निरूपण ७७१
अन्तरकरण करनेवाले क्षपकके स्थिति और अनुभागके उत्कर्षण और अपकर्षणका विधान ७७३
अपवर्तित द्रव्यके निक्षेप, अतिस्थापना आदिका निरूपण ७७४
अपकर्षित, उत्कर्षित और संक्रमित द्रव्यके उत्तरकालमें, वृद्धि हानि और अवस्थानका वर्णन ७७७
जघन्य-उत्कृष्ट निक्षेप और अतिस्था-पनाके प्रमाणका वर्णन ७७९
उत्कर्षित या अपकर्षित स्थितिका बध्य-मान स्थितिके साथ हीनाधिकताका निरूपण ७८२
वृद्धि, हानि और अवस्थान संज्ञाओंका स्वरूप और उनका अल्पबहुत्व ७८५
अश्वकर्णकरणका विधान ७८७
अपूर्वस्पर्धक करनेका ” ७८९
अपूर्वस्पर्धकोंका अल्पबहुत्व ७९०
द्वितीयादिसमयवर्ती अश्वकर्णकरण-कारककी विशेष क्रियाओंका निरूपण ७९४
अश्वकर्णकरणकारकके अन्तिमसमयमें स्थितिबंध और स्थितिसत्त्वका अल्पबहुत्व ७९७
कृष्टिकरणकालका निरूपण ”
प्रथम समयमें की गई कृष्टियोंकी तीव्र-मन्दताका अल्पबहुत्व ७९८
कृष्टि-अन्तरोंका अल्पबहुत्व ७९९
कृष्टिकरणकालके अन्तिम समयमें स्थितिबंध और स्थितिसत्त्वका अल्पबहुत्व ८०३
ग्रन्थकारद्वारा कृष्टियों-सम्बन्धी पृच्छा-ओंका उद्भावन और उनका समाधान ८०५
अनुभाग और प्रदेशोंकी अपेक्षा कृष्टियोंकी हीनाधिकताका वर्णन ८११
प्रथम समयवर्ती कृष्टियोंके स्थिति-सत्त्वका निरूपण ८१६
कृष्टिवेदकके उदयस्थिति-सम्बन्धी प्रदेशाग्रोंके यवमध्य-रचनाका निरूपण ८१७
कृष्टिवेदकके उदयस्थितिसम्बन्धी प्रदेशाग्रोंका अल्पबहुत्व ८१८
कृष्टिवेदकके पूर्वभवोंमें बाँधे हुए कर्मों-का गति आदि मार्गणाओंमें भजनीय-अभजनीयताका वर्णन ८२०
कृष्टिवेदकके एक समयबद्ध और भवबद्ध कर्मोंका वर्णन ८२९

कृष्टिवेदकके बध्यमान कर्मप्रदेशाग्रोंका कृष्टियोंमें संक्रमणकी सम्भवताका वर्णन ८३१
विवक्षित स्थितिविशेष और अनुभाग-विशेषोंमें भववद्धशेष और समय-प्रवद्धशेष प्रदेशाग्रोंका वर्णन ८३३
एक स्थितिविशेषमें सामान्यस्थिति और असामान्यस्थितिका निरूपण ८३४
प्रवाह्यमान और अप्रवाह्यमान उपदेश-की अपेक्षा निर्लेपनस्थानोंका वर्णन ८३८
समयप्रवद्धशेषोंका एक स्थिति आदिमें सम्भव-असम्भवताका वर्णन ८४१
सामान्य-असामान्य स्थितियोंकी सान्तर-निरन्तरताका निर्देश ८४२
समयप्रवद्ध और भववद्ध प्रदेशाग्रोंके निर्लेपनस्थानोंके यवमध्यका वर्णन ८४५
निर्लेपनस्थानोंके अल्पवहुत्वका वर्णन ८४७
प्रथमसमयवर्ती कृष्टिवेदकके स्थितिसत्त्व और स्थितिवन्धका अल्पवहुत्व ८४९
कृष्टिवेदकके मोहनीयके अनुभागकी प्रतिसमय अपवर्तनाका निरूपण ८५०
क्रोधादिकषायोंके संग्रहकृष्टियोंकी वध्य-मान-अवध्यमानताका निरूपण ८५१
अपूर्वकृष्टियोंके निर्वृत्ति-विषयक शकाओं-का समाधान ८५२
क्रोधकी प्रथम कृष्टिवेदकके प्रथम-स्थिति में समयाधिक आवलीकाल शेष रहने तक सम्भव कार्य-विशेषोंका वर्णन ८५५
कृष्टिवेदकके सक्रमण किये जानेवाले प्रदेशाग्रकी विशेष विधिका निरूपण ८५६
क्रोधकी द्वितीय कृष्टिवेदकके प्रथम समय-में शेष ग्यारह सग्रहकृष्टियोंकी अन्तर-कृष्टियोंके अल्पवहुत्वका निरूपण ८५७
सग्रहकृष्टियोंके क्रोधकी द्वितीय कृष्टि-वेदकके चरम समयमें होनेवाले स्थितिवन्ध और स्थितिसत्त्वका अल्पवहुत्व ८५८
मानकी प्रथम कृष्टिके और शेष कृष्टि-योंके वेदकके सम्भव कार्य-विशेषों-का वर्णन ८५९
मायाकी प्रथम कृष्टि और शेष कृष्टि-योंके वेदकके सम्भव कार्य-विशेषों का निरूपण ८६०
लोभ की प्रथम कृष्टि और शेष कृष्टि-योंके वेदकके सम्भव कार्य-विशेषों-का निरूपण ८६१
सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिवेदककी अतर-कृष्टियोंका अल्पवहुत्व ८६२
सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टियोंमें प्रथमादि समयमें दिये जानेवाले प्रदेशाग्रकी श्रेणिप्ररूपणा ८६५
सूक्ष्मसाम्परायिक कृष्टिकारकके कष्टियों-में दृश्यमान प्रदेशाग्रकी श्रेणि-प्ररूपणा ८६६
प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिकके उत्कर्षण किये जानेवाले प्रदेशाग्र-की श्रेणिप्ररूपणा ८७०
मोहकर्मके कृष्टिकरण हो जानेपर होने-वाले वन्ध, उदयादि-विषयक शंकाओंका उद्भावन और उनका समाधान ८७३
ग्रन्थकार-द्वारा चरमसमयवर्ती वादर-साम्परायिक और सूक्ष्मसाम्परा-यिकके वंधने वाले कर्मोंका अल्प-वहुत्व ८७४
सूक्ष्मसाम्परायिकके वेदन किये जाने-वाले देशघाती और सर्वघाती मति-श्रुतज्ञानावरणका निरूपण ८७५
कृष्टिवेदक क्षपकके शेष कर्मोंके वेदक-अवेदकताका निरूपण ८७७
कृष्टिकरण कर देनेपर संभव विचारों-का निरूपण ८७८
क्षपकके कृष्टियोंके वेदन-अवेदन-सम्वन्धी शंकाओंका ग्रन्थकारके द्वारा उद्भावन और समाधान ८७९

कृष्टियोंके वेदन या क्षपणकालमें उनके बन्धक या अबन्धक रहनेका निरूपण ८८१
कृष्टि-क्षपण-कालमें उनके स्थिति और अनुभागके उदीरणा-सक्रमणादि-विषयक शकाओंका उद्भावन और समाधान ८८२
एक कृष्टिसे दूसरी कृष्टिका वेदन करता हुआ क्षपक पूर्व-वेदित कृष्टिके शेष अशको क्या उदयसे संक्रान्त करता है, या उदीरणासे ? इस शकाका समाधान ८८६
क्रोधादि विभिन्न कषायोंके उदयसे श्रेणी चढ़नेवाले पुरुषवेदी क्षपकके होने वाली विभिन्नताओंका निरूपण ८६०
स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदयसे श्रेणी चढ़ने वाले क्षपककी विभिन्नताओंका निरूपण ८६३
चरम समयवर्ती सूक्ष्मसाम्परायिक क्षपकके होनेवाले स्थितिबन्ध और स्थितिसत्त्वका निरूपण ८६४
क्षीणकषाय-वीतराग-छद्मस्थके कार्य-विशेषोंका निरूपण ,,
ग्रन्थकार-द्वारा कषायोंके क्षीण हो जाने पर संभव वीचारोंके जाननेकी सूचना ८६५
क्षपणा-सम्बन्धी अन्तिम संग्रहणी मूल-गाथा-द्वारा प्रकृत अर्थका उपसंहार ,,
कषायोके क्षय हो जानेके पश्चात् शेष तीन घातिया कर्मोंके क्षय हो जाने पर सर्वज्ञ, सर्वदर्शी होकर तीर्थ-प्रवर्तनके लिए केवलीके विहारका निरूपण ८६६

**क्षपणाधिकार-चूलिका ८६७-८६६**

बारह सूत्रगाथओंके द्वारा मोहनीय कर्म-के क्षपणका उपसंहारात्मक निरूपण ८६७

**पश्चिमस्कन्ध-अर्थाधिकार ६००-६०६**

केवलिसमुद्घातका निरूपण ६००
केवलिसमुद्घातके चौथे समयके पश्चात् होने वाले कार्य-विशेषोंका निरूपण ६०२
योगनिरोधका वर्णन ६०४
कृष्टिकरणका वर्णन ६०५
शैलेशी अवस्थाका वर्णन ,,

# परिशिष्ट

१ कसायपाहुड-सुत्तगाहा ६०७
२ गाथानुक्रमणिका ६२६
३ चूर्णि-उद्धृत-गाथा-सूची ६२६
४ ग्रन्थनामोल्लेख ६२६
५ विशिष्ट-प्रकरण-उल्लेख ६२६
६ विशिष्ट-समर्पण-सूत्र-सूची ६३०
७ पवाइज्जत-अपवाइज्जंत-उपदेशोल्लेख ६३२